

27-1-2008

रविवार

ॐ
सन्देश

सभी परमात्माओं को मेरा नमस्कार - - -

अपने आप को जानना ही सर्मपेण ध्यान है, यही पूर्ण समाधान है। जो प्राप्त होने पर समाधी लग जाती है। अब मैं महसूस कर रहा हूँ। कि अब मैं आप के अंतर्गत करीब हूँ, अंतर्गत पास हूँ। आप के ही भितर हूँ। अब लुहरी हर सांस में महसूस कर रहा हूँ। लुहरे भितर बाहर के वातावरण से उठने वाला प्रत्येक विचार देख पा रहा हूँ। और उस विचार का "मैं" के अंकार से होने वाला प्रभाव भी अनुभव कर रहा हूँ। मैं इतनी करीब आप पहुँची नहीं थी। अपने बच्चों के करीब माँ को पहुँचने का समय अब मिला है। अब बाहरी भिड़ नहीं है। अब मैं और मेरा बच्चा ही है।

बच्चे तु किसे श्वोज रहा है। किसके लिये भरक रहा है। किसके लिये योजनाएँ बना रहा है। किसे पाने की कोशिश कर रहा है। क्या पाने की इच्छा कर रहा है। क्या पाना चाहता है। क्या श्वरीदना चाहता है। क्यो श्वरीदना चाहता है। जिसके लिये श्वरीदना चाहता है। वह उसमें नहीं है। यह बात वह श्वरीद कर ही तु जान पायेगा कि वह श्वरीदकर भी वह नहीं मिला जो तु पाना चाहता था।

फिर भी तु अनुभव ले नहीं सिकेगा। अब तु अपने पाने का दूसरा लक्ष्य निर्धारित करेगा। फिर प्रयत्न से उसे भी प्राप्त करेगा फिर भी वह नहीं मिलेगा जो तु पाना चाहता था। और यह सिलसिला सतत चलता रहेगा। अब बहुत हो चुका अब थोड़ा शान्त हो जा थोड़ा शान्त रहेगा बैठ और राकान्त में सोच क्या खोज रहा था, क्या हुआ रहा था जो साधनों में खोज रहा था। वह साधनों में कभी मिलेगा क्या। तु जो खोज रहा है। वह "सर्जीव" है, और साधन "निर्जीव" है। वह सर्जीव निर्जीव साधनों में कभी मिल सकता है क्या? थोड़ा सोच थोड़ा विचार कर साधन आराम दे सकते हैं, "सुख" नहीं, आराम शरीर को मिल सकता है। "आत्मा" को नहीं आत्मा को सुख चाहिये और वह सुख और शान्ति तेरे अन्दर ही है। आ-अन्दर आ मेरे अन्दर अन्दर आ। आज मैं तेरे अन्दर हूँ, तेरे अन्दर की शान्ति को मैं अनुभव कर रहा हूँ, तेरे अन्दर बड़ी शान्ति है। बड़ा सुख है। तेरे अन्दर बड़ा आनन्द है। तेरे अन्दर मैं तो वह अनुभव कर ही रहा हूँ। तु भी आज अनुभव कर ले।

आ मेरे बच्ये भितर आ जा। भितर परम शांती है। आज मैं तेरे भितर बैठा हु। और उस आत्मशांती को अनुभव कर रहा हु। और पगले तु है। की- उस शांती को उस सुख को बाहर खोज रहा है।

अरे पगले तु दुस्वी: है। तु सोच तुझे कोई दुस्वी: कर सकता है। कया, नहीं कभी नहीं, तु दुस्वी: इस लीये है। की शरीर मे रहते रहते तुने- शरीर को ही पकड़ लिया है। अरे मेरे बच्ये तु अलग है। और शरीर अलग है। तु शरीर नहीं है। यह सब दुस्वी: का कारण शरीर का "मैं" का अंकार ही है। सारे दुस्वी: का कारण ही यह "मैं" है।

आ उस शरीर के "मैं" के आवरण को छोड़ और भितर आ। भितर कोई दुस्वी: नहीं है। कोई खोज नहीं है। कोई भरकाव नहीं है। कोई अज्ञानी नहीं है। संपूर्ण समाधान है। संपूर्ण शांती है। "संपूर्ण सुख" है। वह सुख है। जो बाहर के साधनों से खरीदा नहीं जा सकता।

वह सुरव तो केवल भितर आने पर ही प्राप्त होता है, आ मेरे बच्चे भितर आ जा। अब तु बाहर रह कर थक गया है। आ भितर आ जा।

अरे सुन तो "एक झण शान्त हो जा, स्थिर हो जा।" अपनी आँखें बंद कर ले। अपना ध्यान तालु भाग पर रख ले। और एक बार केवल, "गुरु मंत्र" का उच्चारण कर ले। यह मंत्र तुझे भुल तक पढ़ा देगा। आज यह "मंत्र" सिद्ध हो गया है। आज इस मंत्र को परमात्मा की सामुहिकता मिल गयी है। आज लाखों आत्मारों इस मंत्र से लाभान्वीत हो रही हैं। आ एक बार इसका उच्चारण संपूर्ण भाव से कर, तु अनुभव करेगा की तेरी भितर की-याजा शुरू हो गयी है। मैं तेरे भितर ही बैठा हूँ। यह मंत्र तुझे भुल तक पढ़ायेगा बाहर तो तु है। मैं तो तेरे ही भितर हूँ, अब मैं तुझे भी भितर आने के लिये लहदय से "पुकार रहा हूँ। आ मेरे बच्चे भितर आ जा।

आ भितर आ कर उस 'परमशान्ती' को अनुभव कर जिसकी तलाश तु जिवनभर कर रहा था। "नाम," "जाती," "भाषा," "धर्म," "रंग," "रूप," "धन," यह सब बाहरी आवरण हैं, इन्हे निकाल कर फेंक 'नंगा' हो जा सत्य हो जा सत्य पर कोई आवरण नहीं रहता सारी संझटे इन आवरणों से हैं, इन सब को लेकर तु कभी भी भितर आ न सकेगा। जिवनभर इन्हे पकड़ कर देख लिया। अब इन्हे छोड़ कर देख, सब छोड़ कर आजा, "मैं भितर तेरा इंतजार कर रहा हूँ।" यह सब आवरण तेरे शरीर के हैं तु शरीर नहीं है। बस यह जान जा।

एक बार केवल एक बार भितर आ कर तो देख तु समाधान को प्राप्त हो जायेगा। उस समाधान में कब समाधी लग गयी तुझे तेरा ही पता नहीं चलेगा। जो बाहर में नहीं मिला वह सब भितर प्राप्त हो जायेगा। अब तु भितर आयेगा ना? मेरी आवाज तु सुनेगा ना? आ- मैं तेरे भितर ही तेरा इंतजार कर रहा हूँ।

तेरा सिर्फ तेरा
बाबा स्वामी (भितर हूँ।)
27/1/2008

